ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स

पढमखंडे जीवट्ठाणे

भावाणुगमो

अवगयअसुद्धभावे उवगयकम्मक्खउच्च उब्भावे ।

पणमिय सव्वरहंते भावणिओगं परूवेमो ॥

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य[1] ॥१॥

णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावो त्ति चउव्विहो भावो । भावसद्दो बज्झत्थणिरवेक्खो अप्पाणम्हि चेव पयट्टो णामभावो होदि । तत्थ ठवणभावो सब्भावासब्भावभेएण दुविहो । विराग-सरागादिभावे अणुहरंती ठवणा सब्भावट्ठवणभावो । तव्विवरीदो असब्भावट्ठवण-

....

अशुद्ध भावोंसे रहित, कर्मक्षयसे प्राप्त हुए हैं चार अनन्तभाव जिनको, ऐसे सर्व अरहंतोंको प्रणाम करके भावानुयोगद्वारका प्ररूपण करते हैं ।

भावानुगमद्वारकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ॥१॥

नाम, स्थापना, द्रव्य, और भावकी अपेक्षा भाव चार प्रकारका है । बाह्य अर्थसे निरपेक्ष अपने आपमें प्रवृत्त 'भाव' यह शब्द नामभावनिक्षेप है । उन चार निक्षेपोंमेंसे स्थापनाभावनिक्षेप, सद्भाव और असद्भावके भेदसे दो प्रकारका है । उनमेंसे विरागी और सरागी आदि भावोंका अनुकरण करनेवाली स्थापना सद्भावस्थापना भावनिक्षेप है । उससे विपरीत असद्भावस्थापना भावनिक्षेप है । द्रव्यभावनिक्षेप आगम और नोआगमके भेदसे

....

[1] भावो विभाव्यते । स द्विविध :, सामान्येन विशेषेण च । स. सि. १.८. ;

भावो । तत्थ दव्वभावो दुविहो आगम-णोआगमभेएण । भावपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वभावो होदि । जो णोआगमदव्वभावो सोवि तिविहो[1] जाणुगसरीर-भवियत-व्वदिरित्तभेएण । तत्थ णोआगमजाणुगसरीरदव्वभावो तिविहो भविय-वट्टमाण-समुज्झा-दभेएण । भावपाहुडपज्ञायपरिणदजीवस्स आहारो जं होसदि सरीरं तं भवियं णाम । भावपाहुडपज्ञायपरिणदजीवेण जमेगीभूदं सरीरं तं वट्टमाणं णाम । भावपाहुडपज्ञाएण परिणदजीवेण एगत्तमुवणमिय जं पुधभूदं सरीरं तं समुज्झादं णाम । भावपाहुडपज्ञायसरूवेण जो जीवो परिणमिस्सदि सो णोआगमभवियदव्वभावो णाम । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वभावो तिविहो सचित्ताचित्त-मिस्सभेएण । तत्थ सचित्तो जीवदव्वं । अचित्तो पोग्गल-धम्माधम्म-कालागासदव्वाणि । पोग्गल-जीवदव्वाणं संजोगो कधंचि जच्चंतरत्तमावण्णो णोआगममिस्सदव्वभावो णाम । कधं दव्वस्स भावव्ववएसो? ण, भवनं भावः, भूतिर्वा भाव इति भावसद्दस्स विउप्पत्तिअवलंबणादो । जो भावभावो सो दुविहो आगम-णोआगमभेएण । भावपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावभावो णाम । णोआगमभावभावो पंचविहो[2] ओदइओ ओवसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामिओ चेदि ।तत्थ कम्मोदय-

....

दो प्रकारका है । भावप्राभृतज्ञायक किन्तु वर्तमानमें अनुपयुक्त जीव आगमद्रव्यभाव कहलाता है। जो नोआगमद्रव्य भावनिक्षेप है वह भी ज्ञायकशरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकार होता है । उनमें नोआगमज्ञायकशरीर द्रव्यभावनिक्षेप भव्य, वर्तमान और समुज्झितके भेदसे तीन प्रकारका है । भावप्राभृतपर्यायसे परिणत जीवका जो शरीर आधार होगा, वह भव्यशरीर है । भावप्राभृतपर्यायसे परिणत जीवके साथ जो एकीभूत शरीर है, वह वर्तमानशरीर है । भावप्राभृतपर्यायसे परिणत जीवके साथ एकत्वको प्राप्त होकर जो पृथक् हुआ शरीर है वह समुज्झितशरीर है । भावप्राभृतपर्यायस्वरूपसे जो जीव परिणत होगा, वह नोआगमभव्यद्रव्य भावनिक्षेप है । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्य भावनिक्षेप, सचित्त, आचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है । उनमें जीवद्रव्य सचित्तभाव है । पुद्गल, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, काल और आकाश द्रव्य अचित्तभाव हैं । कथंचित् जात्यन्तर भावको प्राप्त पुद्गल और जीव द्रव्योंका संयोग नोआगममिश्रद्रव्य भावनिक्षेप है ।

शंका- द्रव्यके 'भाव' ऐसा व्यपदेश कैसे हो सकता है?

समाधान - नहीं, क्योंकि, 'भवनं भावः' अथवा 'भूतिर्वा भावः' इस प्रकार भाव शब्दकी व्युत्पत्तिके अवलंबनसे द्रव्यके भी 'भाव' ऐसा व्यपदेश बन जाता है ।

जो भावनामक भावनिक्षेप है, वह आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । भाव प्राभृतका ज्ञायक और उपर्युक्त जीव आगमभावनामक भावनिक्षेप है । नोआगमभाव भावनिक्षेप औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिकके भेदसे

....

[1] मु. प्रतौ सो तिविहो इति पाठः । [2] ता. २-मु. प्रत्योः पंचविहं इति पाठः ।

जणिदो भावो ओदइओ णाम । कम्मुवसमेण समुब्भूदो ओवसमिओ णाम । कम्माणं खएण[1] पयडीभूदजीवभावो खइओ णाम । कम्मोदए संते वि जं जीवगुणक्खंडमुवलंभदि[2] सो खओवसमिओ भावो णाम । जो चउहि भावेहि पुव्वुत्तेहि वदिरित्तो जीवाजीवगओ सो पारिणामिओ णाम[3] ॥५॥

एदेसु चदुसु भावेसु केण भावेण अहियारो? णोआगमभावभावेण । तं कधं णव्वदे? णामादिसेसभावेहि चोद्दसजीवसमासाणमणप्पभूदेहि इह पओजणाभावा । तिण्णि चेव इह णिक्खेवा होंतु, णाम-ट्ठवणाणं विसेसाभावादो? ण, णामे णामवंतदव्वज्झारोवणियमाभावादो, णामस्स ट्ठवणणियमाभावा, ट्ठवणाए इव आयराणुग्गहाणम[4]-

....

पांच प्रकारका है । उनमेंसे कर्मोदयजनित भावका नाम औदयिक है । कर्मोके उपशमसे उत्पन्न हुए भावका नाम औपशमिक है । कर्मोके क्षयसे प्रकट होनेवाला जीवका भाव क्षायिक है । कर्मोके उदय होते हुए भी जो जीवगुणका खंड (अंश) उपलब्ध रहता है, वह क्षायोपशमिक-भाव है । जो पूर्वोक्त चारों भावोंसे व्यतिरिक्त जीव और अजीवगत भाव है, वह पारिणामिक भाव है ।

शंका - उक्त चार भावोंमेंसे यहां पर किस भावसे अधिकार या प्रयोजन है?

समाधान - यहां नोआगमभावभावसे अधिकार है ।

शंका- यह कैसे जाना जाता है?

समाधान - चौदह जीवसमासोंके लिए अनात्मभूत नामादि शेष भावनिक्षेपोंसे यहां पर कोई प्रयोजन नहीं है, इसीसे जाना जाता है कि यहां नोआगमभाव भावनिक्षेपसे ही प्रयोजन है ।

शंका - यहां पर तीन ही निक्षेप होना चाहिए, क्योंकि, नाम और स्थापनामें कोई विशेषता नहीं है?

समाधान - नहीं, क्योंकि, नामनिक्षेपमें नामवंत द्रव्यके अध्यारोपका कोई नियम नहीं है इसलिए, तथा नामवाली वस्तुकी स्थापना होनी ही चाहिए, एसा कोई नियम नहीं है इसलिए, एवं स्थापनाके समान नामनिक्षेपमें आदर और अनुग्रहका भी

....

[1] मुं. प्रतौ खवेण इति पाठः ।

[2] ता. १, प्रतौ जीवगुणं खंडं इति पाठः ।

[3] ता. १. प्रतौ कम्मुवसमम्मि उवसमभावो खीणम्मि खइयभावो दु । उदयो जीवस्स गुणो खओवसमिओ हवे भावो ॥ कम्मुदयजकम्मिगुणो ओदरियो तत्थ होदि भावो दु । कारणणिरवेक्खभवो सभावियो होदि परिणामो ॥ गो. क. ८१४-८१५.

[4] ता. १ प्रतौ 'आयारा' इति पाठः ।